Vol 5 Issue 1 July 2015 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063

Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume - 5 | Issue - 1 | July - 2015

एक सफल एवं सशक्त पत्रकार डॉ. भीमराव अम्बेडकर

शिवकृपा मिश्र

सारांश :

" भावी उन्नति व उन्नति के मार्गों के खरे स्वरूप की चर्चा के लिए समाचार पत्र जैसा कोई मंच नहीं।" -डॉ. भीमराव अम्बेडकर

समाचार पत्र वर्तमान युग में जनजागरण का प्रभावी माध्यम है। समाचार पत्रों की शक्ति नेपोलियन के शब्दों में अच्छी तरह व्यक्त होती है। उसका कथन था कि एक हजार लपलपाती हुई संगीनों की अपेक्षा मेरे विरुद्ध प्रचार करने वाले चार समाचार पत्र मुझे अधिक भयावह मालूम होते हैं।

Short Profile

Shiv Kripa Mishra is working as a Assistant Professor at Department of Journalism and Mass Communication, Guru Ghasidas Central University Bilaspur, Chhattisgarh.He has completd M.J. , Ph.D. (Journalism).

प्रस्तावना :

स्वातंत्र्य पूर्व काल की भारतीय पत्रकारिता ने निर्भयता, स्पष्टवादिता, देशहितैषिता के गुणों का वहन किया है। उन्नीसवीं शताब्दी की मराठी पत्रकारिता के विषय में आर. के. लेले ने अपने ग्रन्थ 'मराठी वृत्तपत्रांचा इतिहास' में लिखा है कि सामाजिक प्रश्नों को लेकर प्रारब्ध युद्ध सफेदपोश लोगों तक ही सीमित था। उस समय तक बहुजन समाज या उससे भी आगे दलितवर्ग के सामाजिक या अन्य प्रश्नों की समझ उत्पन्न हुई नहीं दिखायी देती है।

सर्वप्रथम महात्मा ज्योतिबा फुले ने ब्राह्मणीधर्म के विरुद्ध प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन्होंने कहा कि 'यदि इन सुधरे हुए विद्वानों के पूर्वजों को स्वदेशाभिमान की सच्ची समझ होती, तो उन्होंने अपनी पुस्तकों में अपने देशबन्धु शुद्रों को पशुओं की अपेक्षा नीच बतलाने वाले लेख लिखकर और सम्भालकर न रखे होते। विष्ठा खाने वाले पशुओं के मूत्र को पीकर ये शुद्ध होते हैं और शूद्र के हाथ का स्वच्छ जल पीकर अपवित्र।'

ब्रिटिशकालीन भारत में ब्राह्मणों ने प्रशासक आदि रूप में अपनी मर्यादित राजकीय सत्ता का उपभोग करते हुए शुद्रों से किस प्रकार का व्यवहार किया है। दूसरी ओर धार्मिक सत्ता का उपभोग करते हुए शूद्रातिशूद्रों की स्थिति क्या कर दी है। ये दोनों बातें उन्होंने जनमानस के समक्ष स्पष्ट करने की कोशिश की। तुलनात्मक रूप से प्रथम कार्य में मा. फुले को अधिक सफलता मिली। दूसरा मार्ग अर्थात् पुरोहितों के धार्मिक अधिकार को चुनौती देना कष्ट साध्य था। भूदेव कहलाने वाले ब्राह्मणों का वर्चस्व शताब्दियों से भारतीय संस्कारों में मिला हुआ है। परन्तु महात्मा फुले फिर भी निरन्तर ब्राह्मणों की गुलामगिरी से इतर जनता को मुक्त होने की प्रेरणा देने का कार्य करते रहे।

महाराष्ट्र में महात्मा ज्योतिबा फुले के विचार आन्दोलनों से ही ब्राह्मणेत्तर समाचार पत्रों का जन्म हुआ। एक जनवरी, अठारह सौ सतहत्तर में कृष्णराव भालेकर ने 'दीनबन्धु' नामक पत्र प्रकाशित किया। इसके साथ ही 'शेतकन्यांचा कैवारी', 'किसानों का मसीहा', 'अंबालहरी', 'विजयी मराठा' आदि अनेक ब्राह्मणेत्तर पत्र प्रकाश में आये। शिवराज जानबा कांबळे ने एक जुलाई उन्नीस सौ आठ में 'सोमवंशीय मित्र' नामक पत्र का प्रकाशन व संपादन किया। उन्नीस सौ तीन में ही इक्वायन गांवों के महारों की सभा सासवड़ में आयोजित की। देवदासी के प्रश्नों को वाणी दी। एक देवदासी का विवाह कराने में सफलता भी प्राप्त की। अस्पृश्यों के प्रश्नों को लेकर अनेक सभा सम्मेलन आयोजित किये गये। उन्नीस सौ बीस में नागपुर में अखिल भारतीय बकिष्कृत वर्ग परिद्वद में भी भाग लिया। उन्होंने मराठी के अतिरिक्त अंग्रेजी पत्रों में भी लेखन किया।

सहायक प्राध्यापक , गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय , बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

अम्बेडकर पूर्व काल में सर्वाधिक उल्लेखनीय नाम है किसन फागू बंदसोडे (बनसोड) का। किसन फागू का जीवन स्वयं जलती हुई मशाल था। उन्होंने अपने सामाजिक व धार्मिक प्रश्न सम्बन्धी विचार देश सेवक, सुबोधपत्रिका, मुंबई वैभव, ज्ञान प्रकाश, केशरी, काल आदि पत्रों द्वारा व्यक्त किये। उन्होंने खुद भी निराश्रित हिंद नागरिक, विटाळविध्वंसक व मजूरपत्रिका का क्रमशः उन्नीस सौ दस, उन्नीस सौ तेरह व उन्नीस सौ अठारह में प्रकाशन आरम्भ किया। उनके लेखों में व्यक्त चिंता दो प्रकार की है। प्रथम वे समानता के लिए हिन्दू समाज से प्रार्थना करते हैं तो दूसरी ओर अस्पृश्यों को भी अपने अधिकारों के लिए जागृत करते हैं। इन्होंने बाबा साहेब के समय में भी पत्र निकालना जारी रखा। उन्नीस सौ इकत्तीस में चोखामेला नामक पत्र शुरू किया। जनवरी उन्नीस सौ तैंतालीस से निराश्रित हिन्द नागरिक पुनः चालू ककरने की घोषणा की। आर्थिक दुर्व्यवस्था, पाठकों के उचित प्रोत्साहन का अभाव, कागज की कमी आदि कारणों से पत्र बार-बार बन्द करने पड़े व अल्पजीवी सिद्ध हुए।

इसी कड़ी में गणेश अक्का जी गवई का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने १९१४ में पाक्षिक 'बहिष्कृत भारत' प्रारम्भ किया। अपना उद्धार अस्पृश्य खुद ही कर सकते हैं यह इस पत्र का मुख्य स्वर था। यद्यपि ऐसा करने पर अनेक बाधाएं आयेंगी, पर उनसे भयभीत नहीं होना चाहिए।

गणेश गवई व किसन फागू दोनों धर्म परिवर्तन के विरोधी थे। हिन्दू धर्म में ही परिवर्तन के पक्षधर थे।

अम्बेडकर पूर्व दलित पत्रकारिता का उद्देश्य अस्पृश्यता दूर कराना, उनके दिलों में शिक्षा का महत्व उतार देना, उनकी उन्नति के लिए हिन्दू समाज व ब्रिटिश सरकार दोनों से प्रार्थना करना था। यह पत्रकारिता राजकीय प्रश्नों को लेकर नहीं चली। इसका कारण सम्भवतः उस समय दलितों को इसकी आवश्यकता नहीं थी। इन अल्पजीवी पत्रों के विचार दीर्घजीवी हैं।

बीसवीं शताब्दी में भारत में नया राजनैतिक वातावरण निर्मित हुआ। स्वराज्य के लिए सामूहिक आन्दोलन आरम्भ हुआ। इसी समय अस्पृश्यों को भी राजनैतिक अधिकार मिलने चाहिए और इसके लिए उनकी आवाज उठाने के लिए एक पत्र की आवश्यकता है, यह डा. अम्बेडकर ने महसूस किया। इसीलिये इन मूक अस्पृश्यों व दलितों का नायक बनकर उनकी भावनाओं को वाणी देने वाले नायक के रूप में 'मूकनायक' पत्र ने डा. अम्बेडकर के हाथों ३१ जनवरी, १९२० को रूप और आकार ग्रहण किया। अब तक बाबा साहेब किसी आन्दोलन या सार्वजनिक कार्य से सम्बद्ध नहीं हुए थे। उनका पहला सार्वजनिक जीवन 'मूकनायक' के माध्यम से पत्रकार के रूप में शुरू हुआ। इसके पश्चात अपना अध्ययन सम्पूर्णकर २० जुलाई, १९२४ में उन्होंने अस्पृश्यों की सामाजिक व राजकीय समस्याओं को सुलझाने के लिए 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना की।

'मूकनायक' में डा. अम्बेडकर ने कुल चौदह लेख लिखे। उनके अध्ययन के लिए विलायत चले जाने पर अन्य सम्पादकों के द्वारा उसका उचित संगोपन नहीं हो सका, परिणामतः १९२३ में उसकी अकाल मृत्यु हो गयी। बाबा साहेब का विचार था कि 'मूकनायक' के प्रकाशन के साथ आजीविका के लिए वकालत जैसा स्वतंत्र व्यवसाय करना ठीक रहेगा, परन्तु उनके लौटने तक मूकनायक ने दलितों की आकांक्षाओं को एक दिशा दी। उन्हें सामाजिक-धार्मिक के साथ राजनैतिक क्षेत्र में भी अपना अधिकार हासिल करना चाहिए। यह नयी समझ विकसित की।

'मूकनायक' के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा था कि भारत असमानताओं का देश है। हिन्दू समाज उस मीनार की तरह है, जिसमें कई मंजिले हैं। इन मंजिलों में कोई प्रवेश द्वार नहीं है। जो व्यक्ति जिस मंजिल में पैदा होता है उसे उसी मंजिल में मरना होता है। हिन्दू समाज व्यवस्था के तीन भाग हैं-ब्राह्मण, अब्राह्मण तथा अछूत। ब्राह्मणों ने ज्ञन का एकाधिकार अपने लिये आरक्षित रखा और दूसरों को उससे वंचित रखा। दलित वर्ग को स्थायी दासता, गरीबी और अज्ञान से मुक्त करने के लिए अत्यधिक प्रयास करने होंगे; इस प्रकार के प्रयासों की शृंखला आरम्भ करने के लिए 'मूकनायक' का प्रकाशन किया जा रहा है। आगे चलकर 'मूकनायक' ने दलितों के हितों का प्रमुख प्रवक्ता की भूमिका सम्पादित की। तीन अप्रैल उन्नीस सौ सत्ताइस के दिन 'बहिष्कृत भारत' नामक पत्र प्रकाशित कर उसकी सारी जवाबदारी डा. अम्बेडकर ने खुद सम्भाली। आर्थिक कठिनाइयों के कारण यह पत्र भी दीर्घजीवी न हो सका।

अब बाबा साहेब ने 'जनता' नामक एक और प्रकाशित करना आरम्भ किया, परन्तु अब तक बाबा साहेब का सार्वजनिक क्षेत्र विस्तृत हो चुका था। अतः इसका सम्पादकत्व श्री नाईक को सौंपा गया, लेकिन बाबा साहेब ने इस पत्र में नियमित लेखन

किया। इस पत्र पर यह घोष वाक्य अंकित रहता था कि 'गुलाम को एहससा दिला दो कि तू गुलाम है, वह विद्रोह कर उठेगा।' 'जनता' पत्र २५ वर्षों तक प्रकाशित होता रहा। परन्तु बीच-बीच में खण्डित होता रहा। इसका सम्पादन का दायित्व अनेक व्यक्तियों ने वहन किया। जनता का ही रूपान्तर चार फरवरी, १९५६ में 'प्रबुद्ध भारत' के रूप में हुआ।

बाबा साहेब की मृत्यु के पश्चात भी वह सन् १९६१ तक चलता रहा। तीन अक्टूबर १९५७ को अखिल भारतीय रिपब्लिकन पक्ष की स्थापना के साथ ही 'प्रबुद्ध भारत' रिपब्लिकन पक्ष का प्रमुख पत्र बन गया और रिपब्लिकन पक्ष की फूट का असर 'प्रबुद्ध भारत' पर भी पड़ा। इसके बंद होने का एक कारण यह भी रहा।

दलित आन्दोलन के इतिहास में इन चारों पत्रों का असाधारण महत्व है। इन पत्रों से तत्कालीन विविध आन्दोलनों के इतिहास व गतिविधियों की जानकारी मिलती है। ये पत्र तत्कालीन सामाजिक स्थिति को बदलने के लिए कटिबद्ध थे। इसीलिए इन्होंने नई दृष्टि व नया आशय देने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। यह कार्य केवल दलितों तक सीमित नहीं था। सम्पूर्ण समाज की सोच व दिशा बदलने का महत्वपूर्ण कार्य इन्होंने किया। इन पत्रों में सवर्ण लेखकों ने भी अपने लेख प्रकाशित करवाये हैं। इसमें सम्पूर्ण हिन्दू समाज की सामाजिक, धार्मिक व भौतिक अधोगति की भी तार्किक मीमांसा होती थी। इन पत्रों से बाबा साहेब के मौलिक चिंतक, विश्लेषक, तर्कनिष्ठ व देशप्रेमी स्वरूप की अभिव्यक्ति होती है।

संदर्भ ग्रन्थ

१-बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वांग्मय, १६ भाग, प्रकाशकः डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, २५ करोड़ अशोक रोड, नई दिल्ली

२-युग प्रणेता आम्बेडकर, लेखिका-डा. कुसुम पटोरिया, आजाद चौक, सदर, नागपुर-१ प्रथम संस्करण,१९९४

३-दलित साहित्य आन्दोलन, लेखक-डॉ. चन्द्र कुमार वरठे, प्रकाशकः रचना प्रकाशन, ५७, नाटाणी भवन, मिश्रराजी का रास्ता, चांदपोल बाजार, जयपुर-३०२००१, संस्करण प्रथम-१९९७

४-आरक्षण बचाओ, सम्पादक-प्रदीप गायकवाड़, समता प्रकाशन समता सैनिकदल, डॉ. आम्बेडकर कालनी, लस्कारीबाग, नागपुर- ४४००१७

५-भारत रत्न डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, लेखक बी. एल. मेघवाल, प्रकाशकः डॉ. अम्बेडकर शिक्षा, साहित्य एवं शोध संस्थान, उदयपुर-३१३००१, संस्करण प्रथम, १९९०

६-डॉ.अम्बेडकर फाउण्डेशन पत्रिका

७-डॉ. अम्बेडकर फाउण्डेशन पत्रिका, २५ अशोक रोड, नयी दिल्ली-११०००१

८- हिन्दी पत्रकारिता के विविध आयाम भाग-१, संपादक डा. वेद प्रताप वैदिक

शिवकृपा मिश्र
सहायक प्राध्यापक , गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय , बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org